स्थायी बंदोबस्त प्रणाली के विभिन्न आयाम एवं प्रभाव

अर्जुन कुमार राम

स्थायी बन्दोबस्त ने ऐसे कुलीन वर्ग को जन्म दिया जो कि भारतीय सामाजिक रीति के अनुकूल नहीं था। इसने साम्राज्यवाद को परिपक्व करने में मदद की और शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध हुई क्रांतियों को दबाने में भी सहायता दी। यह स्थायी बंदोबस्त ही था जिसने प्रारंभ में सरकार को स्थायित्व दिया और गरीब ग्रामीण कृषक वर्ग को और भी गरीब बनाया। जिस प्रकार यूरोप में अभिजात वर्ग क्रांति के विरुद्ध खड़ा हुआ था उसी प्रकार बंगाल में भी यह वर्ग राष्ट्रीय विचारधारा के विपरीत ही रहा।

स्थायी बंदोबस्त या जमींदारी प्रथा से जो आशाएँ की गई थी वे पूरी न हो सकीं। सोचा यह गया था कि भू–स्वामी सुव्यवस्था और स्थायित्व के आधार सिद्ध होंगे। अपने अधिकारों व हितों को बढ़ाने के लिए वे सरकार के साथ सहयोग करेंगे और उसके प्रति आभारी होंगे। लेकिन एकदम से ऐसा नहीं हो सका। आर्थिक बुराई भी शीघ्र ही स्पष्ट हो गई क्योंकि एक बार पौने चार करोड़ रुपये बंगाल के लगान के रूप में नियत करके कंपनी हमेशा के लिए उस अधिकार से वंचित हो गई थी जिसके कारण वह समय–समय पर लगान में वृद्धि कर सके। सरकार के लगान बढ़ाने के अधिकार को बनाए रखने के लिए अब आवश्यक था कि कंपनी के अधीन दूसरे क्षेत्रों में इस तरह की व्यवस्था की जाए जिससे सरकार समय–समय पर लगान–वृद्धि कर सकने में समर्थ हो।